



हिमाचल प्रदेश जायका कृषि परियोजना-II

विशेष दैनिक डायरी
हमीरपुर: 05 मार्च 2026



एम2 लैबो एवं परियोजना की संयुक्त टीम ने बैरठी फार्म पर हाई-टेक संरक्षित कृषि प्रणाली की प्रगति का जायजा लिया

*हि.प्र. में उच्च कृषि-तकनीकी 'भारत-जापान ज्ञान केंद्र' की स्थापना की ओर एक ठोस कदम



सोलन: एम2लैबो (M2Labo) तथा हिमाचल प्रदेश जायका कृषि परियोजना के अधिकारियों की एक संयुक्त टीम ने 5 मार्च को सोलन के निकट बैरठी फार्म का दौरा किया। इस दौर का उद्देश्य संरक्षित कृषि प्रणाली के तहत 1000 वर्ग मीटर क्षेत्र के विकास की प्रगति का निरीक्षण करना था। संयुक्त टीम ने उपचारित क्षेत्र से प्राप्त ताज़ी उपज का स्वाद भी लिया। टीम में एम2लैबो भारत की इंडी एवं सीईओ सुश्री युरिको कातो, इंडी एवं सीओओ श्री देवांग ओज्रा, जिला परियोजना प्रबंधक डॉ. राजेंद्र ठाकुर, जिला परियोजना प्रबंधन इकाई, सोलन के विशेष विशेषज्ञ डॉ. जितेन्द्र कुमार तथा खंड परियोजना प्रबंधक, सोलन डॉ. युवराज शामिल थे।

हिमाचल प्रदेश जायका कृषि परियोजना के परियोजना निदेशक डॉ. सुनील चौहान ने जिला

परियोजना प्रबंधन इकाई, सोलन जानकारी लेकर वहां हुई प्रगति का फीडबैक प्राप्त किया। उन्होंने कहा की यह पहल उच्च कृषि-तकनीकी हस्तक्षेपों के लिए 'भारत-जापान ज्ञान केंद्र' की स्थापना की दिशा में एक ठोस कदम है, जिसकी परिकल्पना माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने की है। करीब छह माह पूर्व एम2लैबो और जायका कृषि परियोजना के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच हुई चर्चा के बाद इस सहयोग पर सहमति बनी थी।

एम2लैबो के विशेषज्ञों की पहली टीम ने 1 सितंबर को बैरठी फार्म का दौरा कर वहां हाई-टेक खेती प्रणाली लागू करने की संभावनाओं का आकलन किया था। इस दौरान टीम ने पॉलीहाउस का संचालन कर रहे अधिकारियों और परियोजना से जुड़े तकनीकी विशेषज्ञों के साथ विस्तृत चर्चा की। अधिकारियों द्वारा इस सुविधा को अगले नवंबर तक पूरा करने की प्रतिबद्धता उत्साहजनक है, जो उन्नत संरक्षित खेती तकनीकों को बढ़ावा देने के रणनीतिक लक्ष्यों के अनुरूप है। इसके बाद 27 नवंबर को एम2लैबो और जायका कृषि परियोजना की संयुक्त टीम ने बैरठी वेजिटेबल फार्म में हाई-टेक हस्तक्षेप की प्रगति का निरीक्षण किया था। संयुक्त टीम ने खुले खेतों में सब्जियों की खेती वाले

प्लॉट्स का भी अवलोकन किया। उन्होंने पाया कि मूली सफलतापूर्वक अंकुरित हो चुकी थी और अच्छी तरह बढ़ रही है, जबकि अन्य फसलों के बीजों का अंकुरण अभी बाकी था। डॉ. राजेंद्र सिंह के अनुसार यह संयुक्त पहल 1000 वर्ग मीटर क्षेत्र में हाई-टेक संरक्षित खेती प्रणाली स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी। प्रारंभिक चरण में सोलराइजेशन के साथ खेत में उपचार के लिए 400 लीटर घोल तैयार कर दो प्रकार के लाभकारी सूक्ष्मजीव—लैक्टो और नट्टो—का प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त भविष्य में तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्राकृतिक खेती तकनीकों का उपयोग करते हुए एक नियंत्रण क्षेत्र भी स्थापित किया गया है। यह तकनीक एम2लैबो और उसके सहयोगियों के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन एवं निगरानी में लागू की गई।

